म.कराट

मि.कं. xxxx प्रातः क्लास पिताश्री ओमशान्ति 30-10-67

ई:- xxxx मुझको सहारा देने वाला:- ओमशान्ति। यह बच्चों के लिए अन्दर से शुक्रिया अक्षर बाप वा टीचर, गुरु के लिए नहीं निकल सकती। क्योंकि बच्चे जानते है कि यह एक खेल बना हुआ है। शुक्रिया आद करने की बात ही नहीं। यह भी बच्चे जानते है ड्रामा अनुसार, ड्रामा अक्षर भी तुम बच्चों की बुधि में आता है। खेल अक्षर कहने से ही xx सारा खेल तुम्हारी बुधि में आ जाता है। गोया स्वदर्शन चक्रधारी तुम आपे ही बन जाते हो। तीनों लोक भी तुम्हारे बुधि में आ जाते है। मुल वतन, सूक्ष्म वतन, स्थुल वतन। यह भी जानते हो अब कुल पुरा होता है। बाप आये त्रिकालदर्शी तुमको x बनाते है। तीनों कालों, तीनों लोकों, आद मध्य अन्त का राज़ समझाते हू। काल समय को कहा जाता है। यह सब बातें नोट करने बिगर याद रह नहीं सक्ती x सकती। तुम बच्चे xxx तो बहुत पाईन्ट्स भूल जाते हो। ड्रामा के डिव्युरेशन को भी तुम जानते हो। तुम ही त्रिनेत्री, त्रिकाल दर्शी बनते हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल जाता है। सबसे बड़ी बात की तुम आस्तिक बन जाते हो। नहीं तो निधणके थे। यह x ज्ञान तुम बच्चों को ही मिल रहा है। स्टुडेन्ट की बुधि में सदेव नालेज मंथन होती रहती है। यह भी नालेज है ना। ऊंच ते ऊंच बाप ही नालेज देते है। ड्रामा अनुसार। ड्रामा अक्षर भी तुम्हारे मुख से ही निकल सकता है। सो भी जो बच्चे सर्विस में तत्पर रहते है। अभी तुम जानते हो x हम ओरफन के थे। जब बेहद का बाप धनका मिला है। तो धणके बने है। वह होते है हद के ओरफन्स। तुम बेहद के ओरफन्स थे। बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। और कोई बाप नहीं जो ऐसा सुख देता हो। पहले 2 तो बच्चे को गविकारी हिंसक बनाये देते है। जिस से आद मध्य अन्त दुःख पाते x है। पापात्मा बन जाते है। पुण्यात्मा काम कटारी नहीं चलाते। पापात्मा काम कटारी चलाते है। नई दुनिया ओसुरानी यह सब तुम बच्चों को बुधि में है। परन्तु औरों को यथीत रीति समझावे, इसी ईश्वरीय धंधे में लग जावे। हर एक की सरकमस्टन्सेज अपनी होती है। समझाये भी वह सकेंगे जो याद की यात्रा में रहते होंगे। याद से बल मिलता है ना। बाप है ही जोहर दार तलवार। तुम बच्चों को जोहर भरता है। योगबल कहा जाता है ना। इस याद में ही बल है। बाहु बल से कब कोई विश्व का मालिक बन नहीं सकते। तुम योग बल से विश्व की बादशाही पाते हो। x योग से बल मिलता है। ज्ञान से xxxx नहीं। बच्चों को समझाया है नालेज सोर्स ऑफ इनकम है। योग को बल कहा जाता है। रात-दिन का फर्क है। अब योग अच्छा x या xxx ज्ञान अच्छा? योग ही नामी-ग्रामी है। योग अर्थात बाप की याद। बाप कहते है इस याद से ही तुम्हारे पाप कट जावेंगे। इस पर ही बाप जोर देते है। ज्ञान और तो सहज है। भगवानुवाच मैं तुमको सहज ज्ञान सुनाता हूं। 84 के चक्र का ज्ञान सुनाता हूं। उस में सब आ जाते है। हिस्ट्री जागराफी है ना। ज्ञान और योग। दोनो है सेकण्ड का काम। बाप को याद करना है। बस। उल्टी से सुल्टी बन बाप को याद करना है। हम आत्मा हमको बाप को याद करना है। इसमें ही मेहनत है। याद की यात्रा में रहने से शरीर का जैसे विस्मृति हो जाती है। घण्टा भर भी ऐसे अशरीरी हो बैठे तो कितनी कमाई हो जाये। मनुष्य रात को कोई 4 कोई 6 कोई 8 घन्टा नींद करते है। तो अशरीरी हो जाते है ना। उस समय में कोई विकर्म नहीं होता। आत्मा थक कर सो जाती है। ऐसे भी नहीं कोई पाप विनाश होते है। वह है नींद। विकर्म होता नहीं है। नींद न करे तो पाप ही करते रहेंगे। तो नींद भी एक बचाव है। सारा दिन सर्विस कर आत्मा कहती है मैं अब सोता हूं। अशरीरी बन जाते है। तुमको भी शरीर होते अशरीरी बनना है। हम आत्मा इस शरीर से न्यारे शान्त स्वरूप हूं। आत्मा की यह महिमा कब नहीं सुनी होगी। आत्मा सत चित है, xxxx आनन्द स्वरूप है... यह परमात्मा की महिमा गाते है सत को, चैतन्य है, सुख का सागर शान्ति का सागर... है। अब फिर तुमको कहेंगे मास्टर। बच्चे को भी मास्टर कहते है। तो बाबा युक्तियां भी बताते रहते है। ऐसे xxxx नहीं x नींद करनी है। नहीं तुमको तो अच्छी रीति पापों को नाश करना है। जितना हो सके बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं बाप हमारे

5

30-10-67

उपर रहम वा कृपा करेंगे। नहीं। यह उनका गायन है रहम दिल बादशाह। यह भी उनका पार्ट है प्रधान से सतोप्रधान बनाना। भक्ति भक्त लोग महिमा गाते हैं। तुम नहीं कहेंगे। इसलिए दिन प्रति दिन गीत आद भी बन्द होते जाते है। स्कूल में कब गीत होती है क्या। बच्चे शान्ति में बैठते रहते हैं। टीचर आता है तो उठ कर खड़े हो जाते है। फिर बैठते हैं। यह बाप कहते है मुझे तो पार्ट मिला हुआ है पढ़ाने का। सो तो पढ़ाना ही है। तुम बच्चों को उठने की दरकार नहीं। आत्मा को बैठ सुनना है। तुम्हारी बात ही सारी दुनिया से न्यारी है। बच्चों को कहेंगे क्या कि तुम उठो। नहीं। वह भक्ति मार्ग में करते हैं। यहां नहीं। बाप तो खुद ही उठ कर नमस्ते करते हैं। बाप कहते हैं भक्ति छी2 है। भक्ति का कर्तव्य बाप को नहीं करना है। ड्रामा अनुसार भक्ति से तुम गिरते ही आये हो। वह काम बाप फिर नहीं करने देंगे। स्कूल में तो बच्चे देर से आते हैं तो या तो टीचर दण्ड लगावेंगे या बाहर में खड़ा कर देंगे। इसलिए डर रहता है टाईम पर पहुंचने का। यहां तो डर की बात ही नहीं। बाप समझाते रहते हैं मुरलियां तो मिलती ही रहती है वह रेग्युलर पढ़नी है। मुरली पढ़ी तो तुम्हारी परजेन्ट पड़ी। नहीं तो अबसेन्ट हो जावेंगे। क्योंकि बाप कहते हैं कि तुमको गुह्य2 राज़ समझाता हूं। तो अगर मुरली मिस कर देंगे तो वह पाईन्ट मिस हो जावेंगी। कोई2 पाइन्ट्स बहुत अच्छी होती हैं। बच्चे भी कहते हैं आज बाबा ने मुरली बहुत अच्छी चलाई है। वह पढ़ाई तो है गवर्मेन्ट की। यह है नई बात। जो दुनिया में कोई नहीं जानते। तुम्हारे चित्र देख कर ही चकित हो जाते हैं। कोई शास्त्रों में भी नहीं है। भगवान ने चित्र बनाई थी। तुम्हारी यह चित्रशाला है नई। ब्राहमण कुल के जो देवता बनने वाले होंगे उनकी ही बुधि में बैठेगा। कहेंगे यह तो ठीक है। कल्प पहले भी हमने पढ़ा था। भगवान पढ़ाते हैं। गीता में तो भूल कर दी है नाम बदली कर। इसलिए तुम लिखते हो मनुष्यों की गाई हुई गीता से भारत नर्कवासी बना है। और परम पिता परमात्मा की से भारत स्वर्गवासी का मालिक बनता है। फर्क तो है ना। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में पहले नम्बर की गीता है। क्योंकि पहला धर्म ही यह है। फिर आधा कल्प के बाद, उसके भी बहुत पीछे, क्योंकि इब्राहीम आया, पहले तो अकेला था। फिर एक से दो, दो से चार हुये। जब धर्म की वृधी होते लाख डेढ़ हो तब शास्त्र आद बने। उनके भी आधा समय बाद में बनते होंगे। हिसाब किया जाता है।

बच्चों को तो बहुत खुशी में रहना चाहिए। बाप से हमको वर्सा मिलता है। तुम जानते हो बाबा हमारा सारा ज्ञान, सृष्टि के चक्र को समझाते है। यह है बेहद की हिस्ट्री जागराफी। सब को बोलो यहां वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी समझाया जाता है। जो और कोई सिखला न सके। वर्ल्ड का नक्शा निकालते हैं परन्तु उन में कहां दिखाते हैं कि ल0 ना0 का राज्य कब था, कितना समय चला। वर्ल्ड तो एक ही है। भारत में ही राज्य कर के गये है। अब नहीं है। यह बातें किसकी भी बुधि में नहीं हैं। वह तो कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम मीठे2 बच्चों को जास्ती कोई तकलीफ नहीं देते। बाप कहते हैं पावन बनना है। पावन बनने लिए तुम भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाते हो। अब समझते हो धक्के खाते 2500 वर्ष गुजर गये। अब फिर से बाबा आया है राज भाग देने। तुमको यही याद है। पुरानी से नई, नई सो फिर पुरानी दुनिया जरूर होनी ही है। अभी तुम पुरानी भारत की मालिक हो ना। फिर नये के मालिक बनेंगे। एक तरफ भारत की बहुत महिमा गाते रहते हैं, दूसरे तरफ फिर बहुत ग्लानी करते रहते। वह भी तुम्हारे पास गीत है। तुम लोग समझाते हो अब क्या2 हो रहा है। यह दोनो गीत भी सुनानी चाहिए। तुम बताये हो कहां रामराज्य कहां यह। सीढ़ी तो बहुत अच्छी है। बच्चों को कोचिंग देने लिए भी प्रबन्ध कर देहली में भी म्युजियम खुल रहा है। बच्चियों को भेज देंगे। बाप तो गरीब निवाज़। गरीबों की ही मिलेगी। शाहुकार लोग तो बच्चियों को काम कटारी पर चढ़ाये देंगे। कल्प पहले जो आये होंगे आना।

30-10-67

मिक्रात की कोई बात नहीं। शिव बाबा को कब मिक्रात नहीं होती। दादा को होंगी। इनको अपना भी फिक्र है ना। हमको नम्बरवन पावन बनना है। इस में है गुप्त पुरुषार्थ। चार्ट रखने से समझ में आता है इनका पुरुषार्थ जाती है। बाप हमेशा समझाते रहते हैं डायरी रखो। बहुत बच्चे लिखते भी हैं कि चार्ट लिखने से सुधार बहुत हुआ है। यह युक्ति बहुत अच्छा है। तो सभी को करना चाहिए ना। डाईरी रखने से तुमको बहुत फायदा है। डायरी रखना माना बाप को याद करना है। इस में बाप की याद लिखनी है। डाईरी भी मददगार बनेंगी। पुरुषार्थ होगा। डाइरियाँ कितनी लाखों कोड़ों बनती हैं। नोट आद करने लिए। सबसे मुख्य बात तो यह है नोट करने की। यह कब भूलना न चाहिए। रात को हिसाब निकालना चाहिए। फिर मालूम पड़ेगा यह तो हमको घाटा पड़ रहा है। क्योंकि जन्म जन्मान्तर के विकर्म भस्म करनी है। बाप रास्ता बताते हैं। अपने उपर कृपा रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं। आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा वा रहम मांगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं मांगना है। ब्राह्मणियों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना यह भी पाप है। बाप कहते है ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पहले जिन्होंने बीज बोया है वैसा पाया है। वह आपे ही करेंगे। तुम कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पावेगा। मनुष्य दान-पुण्य करते है तो रिटर्न में मिलता है ना। राजा के पास वा शाहुकार के पास जन्म होता है। जिसको करना होगा वह आपे ही करेगा। तुमको कोई मांगना न है। कल्प पहले जिन्होंने जितना किया है ड्रामा उनसे करावेगा। मांगने की दरकार नहीं। कई बुधु बच्चियाँ हैं जो मांगती है। बाबा कहते है हुण्डी भरते रहते है। सर्विस के लिए ही। हम बच्चों को थोड़े ही कहेंगे कि पैसा दो। भक्ति मार्ग की बात ज्ञान मार्ग में नहीं होती। जिन्होंने कल्प पहले मदद की है वह करते रहेंगे। आपे ही। कब मांगना न है। कोई ब्राह्मणियाँ आती हैं तो आपस में बोलती हैं तुम कितना देंगे। बाबा उनको चर्चा कहता। कायदा नहीं। यह चंदा आद तुम नहीं कर सकते। यह सन्यासी लोग करते हैं। भक्ति मार्ग में थोड़ा भी देते हैं तो उसका रिटर्न में एक जन्म लिये मिलता है। यह फिर है जन्म जन्मान्तर लिए। तो जन्म जन्मान्तर लिए कुछ भी दे देना तो अच्छा है ना। इनका तो नाम ही भोला भण्डारी है। तुम पुरुषार्थ करते हो तो विजय माला मे पिरोये जाते हो। भण्डारा भरपुर काल कंटक दूर है। वहाँ कब अकाले मृत्यु होती नहीं। यहाँ मनुष्य काल से कितना डरते हैं। थोड़ा भी कुछ होता है तो मौत याद आ जाता। यह ख्याल ही नहीं। तुम अमरपुरी में चलते हो। यह है मृत्युलोक है। भक्ति मार्ग में है ही बेसमझ की महिमा। कितना मनुष्य खुश होते हैं। इनको कहा जाता है अन्धश्रद्धा। अंधे के औलाद अंधे हैं। ऐसे ही नाम रख दिया है। युधिष्ठर और धृतराष्ट्र। यह नाम कोई है था। अब तुम समझते हो भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग है। बथ नाट अपेनी है। आओ तो हम आप को समझावें। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। सतयुग में है पूज्य। कलियुग में है पुजारी। तुम पुजारी हो। फिर अपनी पूजा क्यों करते हो। एक दिन तुम्हारा भी सुनेंगे। पढ़ेंगे। पूजा करने वालों को पुजारी भ्रष्टाचारी कहा जाता है। भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। तुम्हारा आधा कल्प तो बहुत अच्छी तरह पास हुआ है। नीचे गिरते आये हो। जगतनाथ पुरी में बहुत गंदे चित्र है। बाबा तो अनुभवी है ना। चारों तरफ घूमा हुआ है। गोरे से सांवरा बना है। गांव में रहने वाला था। वास्तव में यह सारा भारत गांव है। तुम गांव के छोड़े हो। अब तुम समझते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। ऐसे मत समझना हम बम्बई में रहने वाले है। बम्बई भी स्वर्ग के आगे क्या है। कुछ भी नहीं। एक पत्थर भी नहीं। हम गांव के छोड़े निधन के बन गये हैं। अब फिर हम स्वर्ग के मालिक बन रहे तो वह तो वह खुशी रहनी चाहिए ना। नाम ही है स्वर्ग। कितने हीरे जवाहर महलों में लगे रहते ...नाथ का मंदिर कितना सोने जवाहरों से भरा हुआ था। पहले2 शिव का ही मंदिर बनाते हैं। ...र थे। अभी तो भारत गांव है। सतयुग में बहुत आला माला था। यह बातें तुम्हारे सिवाय और कोई अच्छा ओम।